

I shall request Members to rise in their seats for a minute as a mark of respect to the memory of Shri Maithilisharan Gupta.

(Hon. Members then stood in silence for one minute)

Secretary will convey to the members of the bereaved family the profound sorrow and sympathy of this House.

**ANNOUNCEMENT RE. ALLOTMENT OF TIME FOR THE CONSIDERATION OF THE MINERAL OILS (ADDITIONAL DUTIES OF EXCISE AND CUSTOMS) AMENDMENT BILL, 1964**

MR. CHAIRMAN: I have to inform Members that under rule 186(2) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I have allotted one hour for the completion of all stages involved in the consideration and return of the Mineral Oils (Additional Duties of Excise and Customs) Amendment Bill, 1964, by the Rajya Sabha, including the consideration and passing of amendments, if any, to the Bill.

**THE APPROPRIATION (NO. 6) BILL, 1964—contd.**

MR. CHAIRMAN: Mr. Chordia. Before they begin, I hope that Members know that they will have to confine themselves to ten minutes each.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरडिया (मध्य प्रदेश) : अध्यक्ष महोदय, जो पूरक अनुदानें प्रस्तुत की गई हैं उनके सम्बन्ध में सब से पहले मैं शिक्षा आयोग के बारे में चर्चा करना चाहूंगा। शिक्षा आयोग की नियुक्ति और उसके लिए जो विदेशों से सहयोग लेने की भावना इसमें प्रकट की है उससे मझे बहुत दख होता है कि

एक समय था कि भारतवर्ष जगतगुरु के स्थान पर था और आज वह भारत बाहर के लोगों से भीख मांग रहा है शिक्षा प्राप्त करने के लिए, एक समय था जब कि यह देश सोने की चिड़िया कहा जाता था और आज हमको भीख मागनी पड़ रही है बाहर से अनाज के लिए, खाने के लिए, धन के लिए, सब बातों के लिए; और शिक्षा के मामले में भी हम बाहर वालों का मुंह देखें, क्या हमारे यहां शास्त्री नहीं हैं, क्या हमारे यहां आचार्य नहीं हैं, क्या हमारे यहां पंडित नहीं हैं लेकिन चकि उनके पास डाक्टरेट का लेबिल नहीं है इसलिये उनकी पूछ नहीं है उनके सामने जो कि डाक्टरेट के लेबिलधारी हैं या जो कि विदेशों से अपनी शिक्षा ग्रहण कर के आते हैं। तो ऐसी स्थिति में मैं प्रार्थना करूंगा कि अगर हम चाहते हैं कि हमारा जो सुस्त भारत है वह जाग्रत हो, अगर हमें भारत की सोई हुई आत्मा पर जो राख का आवरण जम चुका है उसे जाग्रत करना है, तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे यहां जो मनीषी हैं, विद्वान हैं, पंडित हैं, शास्त्री हैं उनका सहयोग एजुकेशन कमिशन में लें और उसके बाद जो भी सिफारिशें की जाने वाली है उनको कार्यान्वित करें।

अध्यक्ष महोदय, इसमें जो यादी दी गई है कि कमिशन के कौन कौन सदस्य होंगे उसको देख कर के कुछ ऐसा लगता है कि जिनका शिक्षा के क्षेत्र में अभी तक नाम तक नहीं सुना गया ऐसे लोगों को इसमें शामिल किया गया है और उनसे अपेक्षा यह है कि उनके द्वारा हमारी शिक्षा की व्यवस्था का अध्ययन हो। हमारे पूर्व वक्ता सिन्हा साहब ने हिन्दी के बारे में बहुत अच्छा कहा था कि हिन्दी की लहर तेजी से आगे बढ़ रही है और उसकी तेजी को कोई रोक नहीं सकता किन्तु २ कंकड़ और पत्थर उसके प्रवाह को रोकने का प्रयत्न कर रही हैं। प्रार्थना है कि उनका हित इसमें है कि

[श्री विमलकुमार मन्नीलालजी चौरडिया]

वे अपने आप हट जाय अन्यथा उनको नुकसान होगा। आज जो हमारे शिक्षा मंत्री का रवैया है और जो अखबारों में इसके बारे में प्रकाशन होता है, प्रदर्शन होता है और सब कुछ चलता है, उससे ऐसा लगता है कि अभी तक जो अपने आप को अंग्रेजी का मानसपुत्र कहते हैं और जो कि चाहते हैं कि हमारे यहाँ अंग्रेजी कायम रहे वह किसी भी तरह से इसको बदस्तूर बनाये रखना चाहते हैं।

अध्यक्ष महोदय, हमारे यहाँ हमारे राष्ट्र की एक भाषा होगी मगर साथ ही प्रान्तों की भाषाएँ भी उसके साथ साथ चलेंगी, ऐसा तो नहीं है कि केवल एक भाषा ही चल जायें। हमारे दक्षिण भारत के तथा बंगाल के लोगों का बहाना दिया जाता है कि दक्षिण भारत के लोग हिन्दी को आने देना नहीं चाहते और उसके प्रति उनका आकर्षण नहीं है, तो मैं एक प्रश्न पूछता हूँ कि क्या वे अंग्रेजी को पसन्द करते हैं, क्या वे हिन्दुस्तानी को, हिन्दी को नहीं चाहते हैं तो क्या हमेशा के लिए अंग्रेजी को चाहते हैं, सम्भवतः यह उनका पुराना मोह है, संस्कार है और इसीलिये सम्भवतः आज भी ऐसा कहते हैं कि हमको अंग्रेजी प्रिय है और भारत की हिन्दी प्रिय नहीं है लेकिन आगे चल कर ऐसा नहीं हो सकता कारण विदेशी भाषा की तुलना में स्वदेशी भाषा ही प्रिय होगी। इसलिये हमारी प्रार्थना है कि हमारी सरकार शिक्षा आयोग में ऐसे लोगों के प्रतिनिधित्व पर विचार कर के शिक्षा आयोग के माध्यम से ठीक व्यवस्था करे।

अध्यक्ष महोदय, शक्कर के बारे में भी इसमें मांग की गई है सबसिडी के लिए। शक्कर के मामले में जो घाटा हुआ है उसके लिए मांग की है और फिर इसमें इतने प्रेम से लिखते हैं कि हमको १८ करोड़ की विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई। मैं मंत्री महोदय

से एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ कि जितनी शक्कर हमने यहाँ से निर्यात की उतनी शक्कर के उत्पादन में कितने एकरेज खेती को हमने काम में लिया और उस एकरेज में अगर हम अनाज बोते, अनाज पैदा करते तो कितने टन अनाज पैदा होता और उसके बदले में यह विदेशी मुद्रा जो हमको शक्कर की वजह से मिली अनाज की वजह से कितनी बचनी। जैसे कि ३१५.८४ करोड़ रुपये का अनाज इसी वर्ष विदेशों से हमें मंगाना पड़ा, तो क्या वे शक्कर के खेत १८ करोड़ रुपये का अनाज भी पैदा नहीं कर सकते थे। अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार की नीति बिम्बुल अनियोजित है या सुनियोजित रूप से जनता को कष्ट देने के लिए है। शक्कर हमारे यहाँ बहुत पैदा होनी है, यहाँ सरप्लस है और यहाँ के आदमी चिल्लाते हैं कि शक्कर नहीं मिलती है, चीनी नहीं मिलती है। शक्कर ऐसी चीज नहीं है कि भंडार में पड़े पड़े सड़ जाय, शक्कर ऐसी चीज नहीं है कि उसको धुन लग जाय मगर हमारी सरकार की ऐसी गलत नीति है जिसके परिणामस्वरूप शक्कर सरप्लस है, विदेशों को जाती है और हमारे यहाँ आदमी उसको लेने के लिए घंटों क्यू लगाए खड़े रहते हैं और इस तरह से हमारे देश की बहुत बड़ी शक्ति का अपव्यय होता है, और हम अपने मंतोष के लिए कहते हैं कि हमको १८ करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त हो गई। यदि उतने क्षेत्रफल में हम अनाज बोते, तो सम्भवतः और ज्यादा अनाज पैदा करते और यह जो ३१५ या ३१८ करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा खर्च हुई अनाज मंगाने में उसमें से कुछ ज्यादा ही बच जाती और इसी मुद्रा को हम कोई और चीज मंगवा सकते थे। तो इस दृष्टि से हमारे शासन को विचार करना चाहिये। लगातार तीन चार वर्षों से घाटा पड़ रहा है, पहले ५६ नये पैमे की

सबसिडी दी गई, दूसरे वर्ष ५.५ करोड़ का और तीसरे वर्ष १४ ५० करोड़ का घाटा उठाया लेकिन इस घाटे को उठा कर भी हमारी सरकार कहती है, आश्वासन देती है, कि हमें विदेशी मुद्रा मिल रही है। तो ऐसी विदेशी मुद्रा लाने की अपेक्षा हम उन क्षेत्रों में अनाज का उत्पादन ही करेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा।

पुनर्वास विभाग की तो हमारे यहाँ पर इतनी भयंकर अव्यवस्था है कि वहाँ पर कई वर्षों से पुरुषार्थियों के—जिनको शरणार्थी कहते हैं—क्लेम्स पड़े हुए हैं, क्लेम तो सेंटिल भी हो गये हैं मगर जब तक कि कोई बीच का दलाल उस डिपार्टमेंट में जा कर के उनकी स्वाहिष न पूरी करे तब तक फाइल हाँ नहीं निकलती है, उनकी भेट पूजा नहीं करते, या तो टर्म उस रिश्ते का है कि भर्त्तन के लिए पैसा नहीं देते, तब तक उनकी फाइल का निर्णय नहीं होता। मेरे यहाँ के बेचारे कई ऐसे लोग हैं जिनका हजारों रुपये का क्लेम मजूर हो चुका है मगर वे बरतन माज माज कर, गर्भे चरा चरा कर, लकड़ियाँ काट काट कर अपनी उदरपूर्ति करते हैं मगर यहाँ के पुनर्वास विभाग को उन पर दया नहीं आई। एप्लाई एप्लाई स्लोली रिप्लाई, इतने दिन गुजर जाने के बाद कही जवाब आता है। मेरे यहाँ कई केस हैं, एक पुत्री बाई बेचारी है, वह बरतन माज माज कर अपना काम चला रही है, उसका क्लेम बहुत पहले मजूर हो चुका है मगर हमारी यह सरकार उस पर अभी भी निर्णय नहीं कर सकी है और उसको क्लेम नहीं मिल रहा है। ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं। पुनर्वास विभाग में जो है वह या तो इसकी ठीक व्यवस्था करे या उस विभाग में जो है उनकी शक्ति का दूसरी जगह उपयोग कीजिये, उन कर्मचारियों को दूसरी जगह ले जाइये, मगर हमारे धन का, हमारी जनता का ऐसा दुरुपयोग हो यह कभी भी न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता।

अणु-शक्ति के बारे में निवेदन है कि यदि हम सचमुच में गांधी जी के भक्त अपने को मानते हैं, तो अहिंसा के आधार पर बिल्कुल अणु बम की बात छोड़ कर के रघुपति राघव राजा राम, ईश्वर अल्ला तेरे नाम गाते हुये चीन के यहाँ जाना है और उससे कहना है कि तुमको डिसअरामिट करना पड़ेगा, तुम अणु बम बना नहीं सकते, हमको मार डालो या तुम अणु बम न बनाओ, या तो हम अहिंसा में पूरी श्रद्धा रखें नहीं तो हमको शक्ति रखनी पड़ेगी, या तो अहिंसा की शक्ति रखें या हिंसा की शक्ति रखें। तो आपको शक्ति रखनी पड़ेगी। फिर हमारे हाथों में, अहिंसकों के हाथों में, अणु बम की शक्ति है, तो उससे हम किसी का नुकसान करेंगे ऐसी कल्पना नहीं की जानी चाहिये। ऐसी स्थिति में यह अत्यंत आवश्यक है कि अपने देश की सुरक्षा के लिए हम अपने यहाँ अणु बम का निर्माण करें। यदि हमारे में शक्ति नहीं है, ताकत नहीं है तो हमारी सारी योजनाएँ, हमारे मारे बड़े बड़े बाध किसी काम आने वाले नहीं हैं जब तक कि हम उनकी रक्षा करने में समर्थ नहीं हैं। हमारी यह योजनाएँ किसी काम की नहीं जब कि हम उसकी रक्षा न कर पाएँ, वे सब रह भी पाएँगी या नहीं? तो ऐसी स्थिति में या तो हम अहिंसा के सिद्धांत पर पूरा विश्वास कर के उसको आगे बढ़ायें और अगर यह नहीं कर सकते, तो शक्ति का संग्रह करें, शक्ति के बिना भक्ति नहीं, चमत्कार के बिना कोई नमस्कार नहीं करता। ऐसी स्थिति में यह अत्यंत आवश्यक है कि हमको शक्ति को रखना चाहिये और अणु बम की शक्ति भी अपने पास रखें और इसका यह मतलब नहीं कि इसका दुरुपयोग किया जाय लेकिन अपने रक्षण के लिए यह आवश्यक है।

अनाज की खरीद के बारे में मैंने बताया ही। अब कोरबा में, मध्य प्रदेश में, अलूमिनियम का प्लांट लगा रहे हैं, उसके

[श्री विमल कुमार मन्नालालजी चौराडिया] ।  
 लिए धन्यवाद देने के साथ साथ यह भी कह देना चाहता हूँ कि हमारी सरकार मध्य प्रदेश के जो प्राकृतिक साधन है उनका उपयोग लेने में बड़ी सुस्त है और इसका एक उदाहरण कोरवा है। यहाँ जो हंगरी की टीम आई थी उसने १९६१ के अगस्त में ही कहा था कि इसकी यहाँ सभावना है, यहाँ अलमूनियम के लिए कच्चा माल मिल रहा है और यहाँ कारखाना खोलना चाहिये लेकिन दो साल दो माह तक हमारी सरकार नींद में सोती रही, फिर दूसरा दल १९६३ ई० के अक्टूबर मास में आया और उसके बाद अब निर्णय करती है कि यहाँ पर अलमूनियम का कारखाना खोलना चाहिये। बहुत खुशी की बात है मगर वहाँ जो प्राकृतिक साधन है उनको उपयोग में लेने में बड़ी सुस्ती है, जनता वहाँ की तैयार, आप खुद भी तैयार फिर भी यह जो सुस्ती आप रेडटैगिज्म की वजह से करते हैं उसको ठीक ठाक करेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा।

एक निवेदन और कर देना चाहता हूँ। जैसे कि रांची में, वहाँ के लोगों में यह भावना थी कि बिहार के लोगों को नियुक्तियों में प्राथमिकता नहीं दी जाती, या जिस क्षेत्र में उद्योग लगाया जाता है वहाँ के लोगों को वहाँ पर नौकर नहीं रखा जाता, उससे वहाँ पर बहुत बड़ी गड़बड़ी हुई जिसको कि रिपोर्टर ने सैवोटज की सजा दी, तो ऐसी स्थिति में मैं यह प्रार्थना करूँगा कि मध्य प्रदेश में यह जो कारखाना खोलने जा रहे हैं उसमें कृपा वरके उस क्षेत्र के बेकार लोगों को स्थान देकर, वहाँ की शक्ति को और वहाँ के इंजीनियर्स को उपयोग में ला कर के उसका काम करे। यही आप लोगों में प्रार्थना है।

श्री भगवत नारायण भागव (उत्तर प्रदेश) : अध्यक्ष महोदय, जो शिक्षा आयोग के लिए प्रावधान किया गया है उसका मैं स्वागत करता हूँ परन्तु यह अवश्य कहना

चाहता हूँ कि अच्छा होता अगर इनके सदस्यों में कुछ सदस्य ऐसे होते जिन्होंने अपना जीवन ग्रामीण क्षेत्रों में बिताया है, जो ग्रामीणों से घुलमिल चुके हैं, जिनको ग्रामीण संस्कृति ग्रामों की आवश्यकताओं तथा वहाँ की परिस्थितियों का पूर्ण रूप से ज्ञान है। मैं ग्रामीण क्षेत्रों के ऊपर जोर इसलिए देता हूँ कि असली भारत ग्रामों में ही रहता है, 80 परसेंट भारतीय ग्रामों में रहते हैं।

[THE DEPUTY CHAIRMAN in the Chair]

हमारे शहरों में तो कालेजों की, युनिवर्सिटियों की भरमार हो रही है, एक एक शहर में दो दो या तीन तीन युनिवर्सिटियाँ खुल जाती हैं, एक एक शहर में पाँच पाँच या सात सात कालेज खुल जाते हैं परन्तु देहात के ऊपर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। तो शिक्षा आयोग को इसके ऊपर ध्यान देना चाहिए कि जिस देश की जनता ग्रामों में रहती है वहाँ के लिए हमें क्या करना चाहिए। केवल साक्षरता से ही काम नहीं चल सकता कि हमने उनको प्राइमरी क्लास में थोड़ी सी कुछ शिक्षा दे दी, तो शिक्षा हो गई, साक्षरता दूसरी चीज है और शिक्षा दूसरी चीज है। हमें ग्रामवासियों को शिक्षित बनाना है, उनको उच्च कोटि की शिक्षा देना है, देहातों में हमको विश्वविद्यालय खोलना है, देहातों में हमको कालेजों को खोलना है। इस बात के ऊपर शिक्षा आयोग को अवश्य ध्यान देना चाहिये।

इस समय जो एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जिस पर मैं सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ वह है शिक्षा की महंगाई। आज कल हम गल्ले वगैरह की महंगाई तो मुनते हैं परन्तु वास्तव में इस देश में शिक्षा बहुत महंगी है। जो धनवान लोग हैं वे अपने बच्चों को ऊँची शिक्षा दिला सकते हैं, अपने रुपये के जोर से उत्तम से उत्तम शिक्षा अपने बच्चों को दे सकते हैं परन्तु जो गरीब आदमी है, या जो मध्यवर्गीय लोग है, वे अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने में असमर्थ

रहते हैं क्योंकि उच्च शिक्षा का खर्च इतना अधिक बढ़ा हुआ है कि थोड़ी आमदनी वाले उसका लाभ उठा ही नहीं सकते हैं। आप कही किसी पब्लिक स्कूल में चले जाइये, कन्वेंट स्कूल में चले जाइये, जिस पब्लिक स्कूल के खोलने की मांग इस सदन में हुई है, तो आपको मालूम होगा कि अगर आपको पहले दरजे में अपने बच्चे को भर्ती करना है तो डेढ़ सौ रुपया उसी वक्त जमा करा लेगे। एक बच्चे के लिये डेढ़ सौ ६० लगता है, फिर माहवारी फीस ५०, ६० ६० लगती है। इसके अतिरिक्त, अगर बाहर के लोग भर्ती होने आए तो बोर्डिंग हाऊस में रहने के २०० २० हैं। इस तरह आज आप सोचिए कि कोई गरीब या मध्यम वर्गीय आदमी चाहता है कि अच्छे स्कुल में, अच्छी सस्था में मेरे बच्चे को प्रवेश मिले तो वह कैसे समर्थ हो सकता है। इस वास्ते शिक्षा आयाग को कोई ऐसा उपाय निकालना चाहिए कि जिसमें उत्तम से उत्तम शिक्षा ऊँचों में ऊँचा शिक्षा गरीब आदमियों के बच्चों के लिये सुलभ हो सके।

यह शिक्षा का विशाल वृक्ष असल में बिल्कुल थोथा, खोखला, समझना चाहिये—वह टिक नहीं सकता—जब तक सारे भारत-वर्ष के ग्रामों में शिक्षा का प्रसार नहीं होता।

दूसरी बात मैं यह कहूँगा कि जो प्राथमिक शिक्षा है वह सारे शिक्षा की बिल्कुल जड़ है, वह मूल है। अगर प्राथमिक शिक्षा के ऊपर ध्यान नहीं दिया जाता है, तो जो उच्च शिक्षा है वह किसी तरह से कायम नहीं रह सकती न वह पनप सकती है। प्राथमिक शिक्षा का यह हाल है कि जो अध्यापक और अध्यापिकाएँ पढ़ाने के लिये रखी जाती हैं उनकी योग्यता बहुत कम होती है क्योंकि उनको वेतन बहुत कम मिलता है। जैसा वेतन मिलता है वैसे ही उन स्कूलों में अध्यापक और अध्यापिकाएँ रहती हैं। प्राथमिक कक्षाओं के लिये जो शिक्षक हैं उनको कोई ट्रेनिंग बाल विज्ञान की नहीं दी जाती। वे नहीं जानते बालक की क्या प्रकृति है, स्वभाव है, बालक का हम किस

प्रकार से सुधार कर सकते हैं। यहाँ तक देखने में आता है कि अध्यापक बल्कि कोमलांगी अध्यापिकाएँ भी बच्चों को बेतों से मारती हैं। वे सुधार का एक ही उपाय जानते हैं कि अगर बच्चा कोई गलती करता है, ज़िद करता है, लड़ता फिरता है, तो उस बच्चे को बेत मारना चाहिये, चाटे मारने चाहिये, उसको धूप में खड़ा करना चाहिये—यही उपाय अध्यापक और अध्यापिकाएँ जानती हैं। मैं यह बात कोई साधारण स्कूलों की नहीं कह रहा हूँ, बहुत से पब्लिक स्कूलों का यह हाल है जहाँ छोटे बच्चों को प्रेम से पढ़ाने की व्यवस्था की गई है और वहाँ पर प्रेम का प्रदर्शन बेतों और पटंगियों की मार से किया जाता है। आप सोचें, कोई बच्चा अगर भूल से गलती कर गया और दो और दो पाच कह गया, तो बुद्धिमान अध्यापक समझता है यह वैसा बेवकूफ लड़का है, मैं तो इसे समझता हूँ दो और दो चार होता है। वह चाहता है जैसी बुद्धि मुझ में है वैसी बुद्धि लड़के में हो। अगर वैसी बुद्धि लड़के में नहीं है, तो बच्चे पर चाटे की मार पड़ गई या बेत मार दिया। उसमें बच्चे के हृदय में कायरता उत्पन्न होती है, भय उत्पन्न होता है, वह झूठ बोलने लगता है। अगर घर में करने के लिये काम दिया और करके नहीं लाया, तो झूठा बहाना करने लगता है क्योंकि वह जानता है अगर सच बात मुँह से निकलती है, तो मार पड़ेगी। इस तरह की सजा को शिक्षा सस्थाओं से कानून के द्वारा बिल्कुल निकाल देना चाहिये।

फिर प्राथमिक शिक्षा का जो गणात्मक रूप है उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया जाता। छोटे छोटे बच्चों का जो पाठ्यक्रम है उसमें उनको छ छ सात सात विषय पढ़ने पड़ते हैं। मैंने उनके विषयों को देखा है—पूरा एक वस्ता भर जाता है। तीसरी चीज यह है कि पाच घंटे वे स्कूलों में पढ़ें और चार घंटे वे घर में आकर काम करें, यह व्यवस्था बड़ी अन्यायपूर्ण है, यह व्यवस्था मिटा देनी चाहिये। बच्चों का शिक्षण ऐसा होना चाहिये कि

[श्री भगवत नारायण भागव]

पाठशाला में जो पढ़ाई हो वही पढ़ाई समझी जाय और वही बच्चा जो शिक्षा प्राप्त कर सके करे। हा, बड़े क्लासों में घर में करने के लिये पढ़ाई का काम दिया जाय। तो प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक रूप के ऊपर ध्यान देना चाहिए और बाल मनोविज्ञान की शिक्षा अध्यापकों और अध्यापिकाओं को मिलनी चाहिये।

तीसरी बात यह है कि शिक्षा आयोग के सामने एक बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न यह होगा कि यूनिवर्सिटियों में शिक्षा का माध्यम क्या हो। मैं कहता हूँ, आजकल तो उच्च कक्षाओं में अंग्रेजी के गुण गाए जा रहे हैं और हिन्दी की हीनता की दुःखि बजाई जा रही है—तब हम क्या आशा करें कि शिक्षा आयोग जिसमें अंग्रेजी के उत्कट प्रेमी भरे हुए हैं वे क्या एक क्षण यह सोचने को तैयार होंगे कि हिन्दी के द्वारा और क्षेत्रीय भाषाओं के द्वारा यूनिवर्सिटियों में शिक्षा दी जा सकती है। एक बात मोचने की है कि जब हिन्दी में और क्षेत्रीय भाषाओं में इंटरमीडिएट तक सब विषयों में शिक्षा दी जाती है तब फिर कैसे आशा की जाय कि जिसने हिन्दी भाषा में शिक्षण पाया है वह बी० ए० या बी० एस० सी० एकदम अंग्रेजी में कैसे समझने लगेगा, वह तो और कमजोर होता जायेगा, जब कि यह कहा जाता है कि हम शिक्षा का स्तर ऊँचा करता चाहते हैं। इस तरह से शिक्षा का स्तर ऊँचा नहीं होगा क्योंकि जिस भाषा में वह शुरू में सीखता आया है उसमें उसको शिक्षण नहीं मिलेगा।

आज के समाचारपत्र में निकला है कि गवर्नमेंट आफ इंडिया ने तय किया है कि आगे जो आल इंडिया सर्विस की परीक्षाएँ होंगी उनमें हिन्दी में उत्तर देने का लाभ दिया जायेगा। जब गवर्नमेंट आफ इंडिया की नीति यह है कि आल इंडिया सर्विस में वह हिन्दी में उत्तर देने की सुविधा देना चाहती है तो फिर विश्वविद्यालयों में हिन्दी

और क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण देने में उनको क्या एतराज होना चाहिए क्योंकि वह बात एक दूसरे के विरुद्ध पड़ती है। इधर एक तरफ आप कहते हैं आई० ए० एस० में हिन्दी में उत्तर दे सकेंगे और दूसरी तरफ आप कहें कि बी० ए० में, एम० ए० में अंग्रेजी में उत्तर दे तो यह एक ऐसी बात नहीं है जो एक दूसरे के विरुद्ध है। तो एक नीति सरकार को निर्धारित करनी चाहिये—या तो पहले दर्जे से ले कर एम० ए० तक सभी शिक्षण अंग्रेजी में दिया जाय, हर एक विषय अंग्रेजी में पढ़ाया जाय, हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा का बहिष्कार कर दिया जाय, या तो यही हो, नहीं तो विश्वविद्यालय तक सारा शिक्षण क्षेत्रीय भाषा या हिन्दी के द्वारा दिया जाय।

شری عبدالغلی (ملکھاپ) : مہتمم

تقریبی چھ سو روپے - ہم ایک ادب سے زیادہ روپیہ ملطور کرنے جا رہے ہیں - وہ تو خیر ملطور کیا ہی جائے گا - مجھے اس میں دو تین بنائیں عرض کرنی ہیں - ایک تو سو سو روپیہ ہم دو کارپوریشن کے لئے ملطور کر رہے ہیں - میں نے جیسا کہ پہلے عرض کیا تھا تھینک ہے اگر سولہ لاکھ تین کے قریب ہم غلہ اس سے خرید پائیں گے - اور اس کو ہم چلنا کے اطمینان کے لئے خرچ کریں گے تو اس میں میرا سچھا کورنمنٹ کے لئے یہ ہے کہ بڑی خوشی سے کھجکے لیکن یہ جو سولہ لاکھ تین ایسا ور - و تقریباً سولہ لاکھ تین کے قریب آج ہم باہر سے منگوانے پر مجبور ہوئے ہیں اس کو اسی کارپوریشن کے

نیچے کر دیجئے اور اسی لاکھ تین کے قریب جو یہ ہوگا اس کو آپ بجائے اس کے کہ ریپبلکن پارٹی اور غریب والیٹیرس کو ایڈمی لائٹوں کا شکر بدناموں بجائے اس کے کہ ان کو بری بری طرح سے جیادوں میں ڈالا جائے صرف اس لئے کہیں کہ وہ کہتے ہیں ہم آپ کے ویسٹ لینڈ کو آباد کریں گے۔ ہم غلہ پیدا کریں گے۔ ہم سرکار کے ہاں مضبوط کریں گے ان کے ہی سپرد یہ کام چھوٹے پیمانے پر کیا جائے کہ چالیس تین بھی . .

श्री गिरिराज किशोर कपूर (मध्य प्रदेश) : क्या इस हाउस में इस वक्ता कोरम है ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: 'There is quorum.'

श्री गिरिराज किशोर कपूर : कितने सदस्यों का कोरम होता है ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: 24 is the quorum.

شہی عبدالغلی : تو میں یہ

عرض کر رہا تھا کہ بجائے اس کے کہ آپ ان کو جیلوں میں ڈالیں یہ تقسیم کا کام آپ ان کے سپرد کریں۔ تقریباً پانچ کروڑ آدمیوں بہن بھائیوں کو وہ اناج دیا جا سکے گا سال بھر کے لئے اور اس سے تقریباً 10 لاکھ ہریجن یا پس ماندہ जातीاں ایذا پیمت پال سکیں گے۔ اس کے علاوہ جیسے آپ ممبر آف پارلیمنٹ گھروں میں دو دہے ملگواتے ہیں اسی طرح 10 لاکھ اور کرے ہوئے بھائی آباد ہو سکیں گے

اس لئے مہرا سبھاو یہ ہے۔ میں نے سہرا ملیم صاحب کو ایک چیتناؤی دی تھی کہ کورپوریشن کی بڑی چرچا ہے اس لئے کورپوریشن کو کورپشن سے بچایا جائے۔ اس میں وہ کورپشن کو روکنے کے لئے روک لٹائیں اور کچھ لوگوں کو چاہے وہ کانگریس پارٹی سے ہی پلاننگ کیوں نہ کرتے ہوں چاہے اپوزیشن سے بھی پلاننگ کیوں نہ کرتے ہوں ان کو ڈائریکٹر رکھیں جس سے ان کی نگرانی ہو سکے۔ ایسا نہ ہو کہ آج جس طرح سے سرکار شس و پلنچ میں پڑ گئی ہے باوجود اس کے کہ اپوزیشن نے سب سے ذمہ دار نمپناؤں نے جس میں کانگریس کے پچھلے پردہ مان پچھلے اشتراپتی اچار یہ کرپٹائی ہیں جس میں دیا بھائی جی ہیں جس میں باجپئی جی ہیں۔ جس میں اے۔ ڈی۔ ملی جی ہیں جس میں کپور جی ہیں ان سب نے مل کر تمام پارٹیوں کے لوگوں نے۔ کوئی پارٹی ایسی نہیں تھی کہ جس کے نہتا نہ ہوں سوائے کمیونسٹ پارٹی کے سب نے مل کر یہ کہا کہ ایسے کے چھف منسٹر اور بچو پٹلاک جو کہ پچھلے منسٹر رہ چکے ہیں وہ کرپٹ ہیں پھر بھی سرکار ابھی تک شس و پلنچ میں پڑی ہوئی ہے۔ اگر یہ بات غلط ہے تو سرکار اپوزیشن کے لیڈروں پر مقدمہ چلا سکتی ہے۔ اسی طرح سے لوگوں

[ شری عبدالغنی ]

کو بھروسہ دلانا ہے - ان کے لئے روتی کے لئے اور اناج کے لئے کہ سب کو مل پائے گا لیکن صبر کی ضرورت ہے لیکن ہماری سرکار اتنی نکمی ہو گئی ہے اتنی کمزور ہو گئی ہے کہ پوٹاپ سنکھ کھروں جو کہ پہلے چھوٹا مسٹر تھے پلنچاپ کے وہ لال بہادر شاستری اور نندا جی کے خلاف باتیں کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ یہ سست ہو گئی ہے اور مہنگائی دن بہ دن بڑھتی جا رہی ہے - وہ پلنچاپ سرکار کی جو موجودہ سرکار ہے اس پر بھی حملہ کرتا ہے کیوں کہ اس کو پتہ ہے کہ یہ کانگریس والے کچھ کرنے والے نہیں ہیں - اگر کانگریس والے یا کانگریس سرکار کچھ کرنے والی ہوتی تو سہرے خلاف مقدمہ بنایا ہوتا - میں عرض کرنا چاہتا ہوں کہ اس سرکار کو چاہئے اور بے شک وہ جتنا روپیہ منظور چاہے کرائے بغیر روپیہ کے کچھ چلنے والا نہیں ہے - لیکن ایسے کرپٹ مسٹر جسے بھجوا پنگناک اور ہریندر مترا ہوں ان کے خلاف بھی کارروائی ضروری کی جانی چاہئے تاکہ لوگوں میں بھروسہ پیدا ہو سکے -

SHRI N. PATRA (Orissa): Is there any decision against them that they were corrupt? Then how is he referring to them as being corrupt? If the hon. Member is alleged that he is also corrupt, how will he relish it?

SHRI ABDUL GHANI: I do not give way. It is not a point of order.

اس لئے میں عرض کر رہا تھا کہ لوگوں میں بھروسہ دلایا جائے کہ آپ جو کوریوریشن بنائے جا رہے ہیں اور اس پر جو اتنا روپیہ خرچ کرنے جا رہے ہیں اس کا صحیح طور پر استعمال ہوگا - آج آپ ایک ایجنسی کھول رہے ہیں اور آلے دن آپ اس طرح کی کوریوریشن کھولتے جائیں گے - کل آپ جوتوں کا کوریوریشن کھولیں گے - کپڑے کا کھولیں گے چھلی کا کھولیں گے سیمینٹ لوہے اور کھاد کا کھولیں گے - آپ اس طرح کی کون کونسی کوریوریشن بنائے جا رہے ہیں - اگر آپ اس طرح کی کوریوریشن بنائے جا رہے ہیں تو دیہی کو دھواش دلائیں دیہی کو بھروسہ دلائیں کہ ان کوریوریشنوں میں کرپشن نہیں ہوگا - اگر کرپشن بڑے پیمانے پر ہوگا تو یقیناً دیہی والے اس بات کو کہلے میں حق بجانب ہونگے کہ سہرا ملہم جو نہک نہت تھا آنسو تہا اور ہارڈ ورکنگ تھا - پھر کہا بات ہے کہ اس کے ہوتے ہوئے کوریوریشن میں اس طرح کا کرپشن ہو رہا ہے - اس لئے میں ان سے عرض کرنا چاہتا ہوں کہ وہ اس بات کا خیال رکھیں کہ اس کوریوریشن میں کسی طرح کی کرپشن کی بات نہ آئے پاوے -

دوسری بات میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اس کوریوریشن بل میں لہجہ کرپشن کے متعلق روپیہ منظور



کروانے کے بارے میں کہا گیا ہے - اس کے بارے میں مجھے خوشی ہوتی ہے۔ لہٰذا میں اس میں مجھے صرف ایک بات کہنی ہے اور وہ یہ ہے کہ جیسا کہ میں نے پہلے کہا تھا - کہ اردو ایک زمانہ تک سارے دیہات میں ہندی کے بعد سب سے پاپولر زبان رہی ہے - خاص طور پر نارتھ میں اور ساؤتھ میں اس کے اخبار نکلتے ہیں اور اس زبان میں طرح طرح کے مشاعرے ہوتے ہیں - میں چاہتا ہوں کہ ایجوکیشن میں تمام اسکولوں میں تو وہ نہ کر پائیں گے لیکن وہ کوئی ایک الگ پارر رکھیں جس میں کہ بچے اپنی زبان میں یعنی اردو میں اگر وہ پڑھنا چاہیں تو تعلیم حاصل کر سکیں - اس کے ساتھ ہی ساتھ جو ہمارا تاریخ کا خزانہ ہے اتھاس ہے ریونیو کے جو کثافات ہیں وہ سب اردو میں ہیں اور توٹر مل کے زمانہ سے لے کر آج تک وہ اردو میں دیکھے ہوئے ہیں ان کو ضائع ہونے سے بچایا جائے - غالب، مرزا، ذوق، انیس کہنی، آزاد سرشار، نسیم ان کے کلام اور اچھے اشعار جو ہیں وہ متلے نہ پائیں کیوں کہ یہ سب چیزیں اردو میں لکھی گئی ہیں - اس لئے میں خاص توجہ دلانا چاہتا ہوں اگر ان چیزوں کو مٹانے کا ان کا ارادہ ہے تو اس سے ہندوستان کی شان پر ایک دھبہ لگے گا -

اب میں ایٹمک شکتی کے بارے میں کچھ عرض کرنا چاہتا ہوں - اس کے بارے میں کہا گیا ہے کہ ہم اچھے تعلیمی کاموں کے لئے اس کا استعمال کریں گے اور اس کے لئے روپیہ منظور کروانے کے لئے کہا گیا ہے جس سے مجھے بڑی خوشی ہوتی ہے - یہ صحیح بات ہے لیکن میں یہ عرض کرنا چاہتا ہوں -

دو رنگی چھوڑ دے یک رنگ ہو جا سراسر موم ہو یا سنگ ہو جا اگر کرنا ہے تو توڑا توڑا کر کے کرتے رہئے - یہ ٹھیک ہے کہ ہم کسی پر حملہ نہیں کریں گے - یہ میں مانتا ہوں کہ اگر ہم پر کوئی حملہ کرے گا تو ہم ہاتھ جوڑ کر کھڑے نہیں ہو جائیں گے - نہ یہ لال بہادر کے بس میں ہے اور نہ ڈیفنس منسٹر شری چوہان کے بس میں ہے - میں اب بھی لڑائی کا خطرہ مانتا ہوں کیوں کہ چین جو ہندی چینی بھائی بھائی کہتا تھا وہ قصائی نکلا - میں کہلے طور پر یہ کہنا چاہتا ہوں کہ سرکار کو اپنی پالیسی پر پھر سے سوچنا چاہئے - ہم کسی پر حملہ کرنے کے لئے ایٹم بم تیار کرنا نہیں چاہتے ہیں لیکن چین جس نے ایٹم بم تیار کر لیا ہے اور ہم پر کبھی بھی حملہ کر سکتا ہے تو اس لئے ہمیں بھی اپنا ایٹم بم تیار رکھنا چاہئے - میں گاندھی وادی ہو کر بھی یہ بات کہتا ہوں - کیوں کہ گاندھی بابا نے

[ شری عہد الغلی ]

کہا تھا کہ کاپرٹا اور بزدلی سے تشدد اچھا ہے۔ یہ بات مجھے انہوں نے اس وقت کہی جب لوگ پاگل ہو گئے تھے۔ جب لوگ دیوانہ ہو کر ایک دوسرے کو مذہب کے نام پر قتل کرتے تھے۔ تو انہوں نے اس وقت کہا تھا کہ کاپرٹا سے تشدد اچھا ہے۔ اگر چین ہمارے ہندوستان کو ہمارے ہندوستان کے مارل کو ہماری سرکار کے مارل کو ہماری فوج کے مارل کو ایٹم بم سے ڈرانا چاہتا ہے تو میں کہتا ہوں کہ چاہے بڑی سے بڑی رقم کیوں نہ منظور کروانی پڑے ہمیں حوصلہ کر کے ایٹم بم بنانا چاہئے۔ اس لئے نہیں کہ تو اس کو کسی پر چلانا ہے بلکہ اگر کوئی ہم پر چلائے گا تو ہم دھم نہیں کھائیں گے۔ اور ہمارا دیس بھی تباہ نہ ہو۔

بہر حال میں آپ کا شکریہ ادا کرتا ہوں کہ آپ نے مجھے بولنے کے لئے وقت دیا لیکن میں ایک بات کی طرف آپ کی توجہ دلانا چاہتا ہوں کہ ریپبلکن پارٹی کے آدمیوں کو لاکھوں چارج کیا جا رہا ہے اور ان کو جیلوں میں ڈالا جا رہا ہے اس کو آپ بلند کیجئے۔ (Time bell rings.) ایک بات میں اور کہنا چاہتا ہوں اس میں مہر چلند کھلے کی منسٹری

کے بارے میں کچھ رویہ منظور کرنے کے لئے کہا گیا ہے۔ انگریزوں کے زمانہ میں بھی مہر چلند کھلے بڑی شان سے تھے۔ خان منسٹری اور مسلم لیگ میں بھی بڑی شان سے رہے اور اب کانگریس میں انہوں نے بڑا کام کیا ہے۔

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री  
(श्री शाहनवाज खाँ) : काबिल तो हर वक्त  
काबिल रहता है ।

شری عہد الغلی : انہوں نے یہ کام کیا بخشی غلام محمد اور ان کے بھائی جو کہ بڑے غریب تھے ان کو بسانے کے لئے یہاں ڈیفنس کالونی اور دوسری کالونی میں جہاں سو اور دو سو روپے گز زمین ملتی تھی انہوں نے تین روپے گز زمین منظور کروائی اس طرح سے بچھاؤں نے بڑا کام کیا اس کے ساتھ ہی ساتھ انہوں نے کانگریس والوں کو پلاٹ دلوائے جن سے لاکھوں روپیہ کرائے کا آتا ہے۔ انہوں نے کانگریس کے لوگوں کو آباد کرنے کے لئے۔ تیری فارم کھولنے کے لئے بڑی بڑی کوآپریٹو فارمس کھولنے کے لئے بڑی بڑی زمینیں دیں۔ لیکن وہاں پر یہ چیزیں تو نہیں ہیں بلکہ وہاں پر بڑی بڑی بلڈنگیں بن گئی ہیں۔ دوکانیں بن گئی ہیں۔ ان سے لاکھوں روپیے کا کرایہ لیا جا رہا ہے۔ یہ بے چارے

बड़े शریف اور اچھے منسٹر ہیں -  
 اور ہمارے شاہنواز کہتے ہیں کہ وہ  
 بڑے اچھے اور قابل میسر - ویسے  
 ہمارے کپور صاحب بھی اس نے  
 بارے میں کافی کہہ چکے ہیں -  
 اسی طرح کے ہمارے کانگریس کے اور  
 بڑے بڑے نیتا ہوں - (Time bell rings.)  
 اور اسی قابلیت کی وجہ سے لوگ  
 کانگریس کے بڑے بڑے نیتا بن جاتے  
 ہوں -

श्री शाहनवाज खाँ : खुदा करे उनकी  
 भी बारी आये ।

شری عبدالغنی : یہ تو قسمت  
 کی بات ہے - اور جو زیادہ خوشامد  
 کرنا ہے وہ پردھان منتری اور سب  
 کچھ ہو جاتا ہے اس میں عقل  
 کی کیا بات ہے -

श्री अब्दुल गनी (पंजाब) : मडम  
 डिप्टी चेयरमैन, हम एक अरब से ज्यादा  
 रुपया मंजूर करने जा रहे हैं। वह तो खैर  
 मंजूर किया ही जायेगा। मुझे इस में दो तीन  
 बातें अर्ज करनी हैं। एक तो सौ करोड़ रुपया  
 हम फूड कारपोरेशन के लिये मंजूर कर रहे  
 हैं : मैं ने जैसा कि पहले अर्ज किया था ठीक  
 है अगर सोला लाख टन के करीब हम गल्ला  
 इससे खरीद पायेंगे और इस को हम जनता  
 के इत्मीनान के लिये खर्च करेंगे तो इसमें मेरा  
 सुझाव गवर्नमेंट के लिये यह है कि बड़ी खुशी  
 से कीजिये लेकिन यह जो सोलह लाख टन  
 आया और जो तकरीबन सोलह लाख टन  
 के करीब आज हम बाहर से मंगवाने पर मजबूर  
 हुए हैं इस को इसी कारपोरेशन के नीचे  
 कर दीजिये और अस्सी लाख टन के करीब  
 जो यह होगा इस को आप बजाए इस के कि

रिपब्लिकन पार्टी और गरीब वालंटियर्स  
 को अपनी लाठियों का गिकार बनायें बजाए  
 इस के कि इन को बड़ी ज़री तरह से जेलो में  
 डाला जाये। सिर्फ इसलिये क्योंकि वे कहते हैं  
 हम आप के वैंस्ट लैंड को आबाद करेंगे।  
 हम गल्ला पैदा करेंगे हम सरकार के हाथ  
 मजबूत करेंगे इन के ही सुपुर्द यह काम  
 छोटे पैमाने पर किया जाये कि चालीस  
 टन भी . . . .

श्री गिरिराज किशोर कपूर (मध्य  
 प्रदेश) : क्या इस हाउस में इस वक्त कौरम  
 है ?

THE DEPUTY CHAIRMAN: There  
 is quorum.

श्री गिरिराज किशोर कपूर : कितने  
 सदस्यों का कौरम होता है ?

THE DEPUTY CHAIRMAN: 24 is  
 the quorum.

श्री अब्दुल गनी : तो मैं यह अर्ज कर रहा  
 था कि बजाए इस के कि आप इन को जेलों  
 में डालें यह तकसीम का काम आप इन के  
 सुपुर्द करें। तकरीबन पांच करोड़ आदमियों  
 बहन भाइयों को वह अनाज दिया जा सकेगा,  
 साल भर के लिए और इस से तकरीबन  
 १० लाख हरिजन या पसमान्दा जातियां  
 अपना पेट पाल सकेंगी। इस के अलावा  
 जैसे आप मैम्बर आफ पार्लियामेंट घरों में  
 दूध मंगवाते हैं इसी तरह १० लाख और  
 गिरे हुए भाई आबाद हो सकेंगे इसलिये  
 मेरा सुझाव यह है। मैं ने सुब्रह्मण्यम साहब को  
 एक चेतावनी दी थी कि कारपोरेशन की  
 बड़ी चर्चा है इसलिये कारपोरेशन को करप्शन  
 से बचाया जाये। इसमें वह करप्शन को रोकने  
 के लिये रोक लागायें और कुछ लोगों को  
 चाहें वे कांग्रेस पार्टी से ही बिलांग क्यों न करते  
 हों चाहें अपोजीशन से भी बिलोंग क्यों न  
 करते हों इन को डायरेक्टर रखें जिस से  
 इन की निगरानी हो सके। ऐसा न हो कि

[श्री अब्दु गनी]

आज जिस तरह से सरकार शशोपज में पड़ गई है बावजूद इस के कि अपोजीशन के सब जिम्मेदार नेताओं ने जिस में कांग्रेस के पिछले प्रधान, पिछले राष्ट्रपति, आचार्य कृपलानी हैं जिस में डा. ह्या भाई जी हैं जिस में बाजपेयी जी हैं, जिस में ए० डी० मणि जी हैं, जिस में कपूर जी हैं इन सब ने मिल कर तमाम पार्टियों के नेताओं ने कोई पार्टी ऐसी नहीं थी कि जिस के नेता न हो सिवाये कम्युनिस्ट पार्टी के सब ने मिल कर यह कहा कि उड़ीसा के चीफ मिनिस्टर और बीजू पटनायक जो कि पिछले मिनिस्टर रह चुके हैं वह करप्ट है फिर भी सरकार अभी तक शशोपज में पड़ी हुई है। अगर यह बात गलत है तो सरकार अपोजीशन के लीडरों पर मुकदमा चला सकती है। इसी तरह से लोगों को भरोसा दिलाना है। अन्न के लिये, रोटी के लिये, और अनाज के लिये कि सब को मिल पायेगा लेकिन सबर की जरूरत है। लेकिन हमारी सरकार इतनी निकम्मी हो गई है, इतनी कमजोर हो गई है कि प्रताप सिंह कैरो जो कि पहले चीफ मिनिस्टर थे पंजाब के, वह लाल बहादुर शास्त्री और नन्दा जी के खिलाफ बातें करते हैं और कहते हैं कि यह सुस्त हो गई है और महगाई दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। वह पंजाब सरकार की जो मौजूदा सरकार है इस पर भी हमला करता है क्योंकि इस को पता है कि यह कांग्रेस वाले कुछ करने वाले नहीं हैं। अगर कांग्रेस वाले या कांग्रेस सरकार कुछ करने वाली होती तो मेरे खिलाफ मुकदमा बनाया होता। मैं अर्ज करना चाहता हूँ कि इस सरकार को चाहिए और बेशक वह जितना रुपया मंजूर चाहे कराये। बगैर रुपये के कुछ चलने वाला नहीं है। लेकिन ऐसे करप्ट मिनिस्टर जैसे बीजू पटनायक और बिरेन्द्र मित्रा हैं इन के खिलाफ भी कार्यवाही जरूरी की जानी चाहिए ताकि लोगों में भरोसा पैदा हो सके।

SHRI N. PATRA (Orissa): Is there any decision against them that they

were corrupt? Then how is he references to them as being corrupt? If the hon. Member is alleged that he is also corrupt, how will he relish it?

SHRI ABDUL GHANI: I do not give way. It is not a point of order.

इसलिये मैं अर्ज कर रहा था कि लोगों में भरोसा दिलाया जाये कि आप जो कारपोरेशन बनाने जा रहे हैं और इस पर जो इतना रुपया खर्च करने जा रहे हैं इस का सही तौर पर इन्वेस्टमेंट होगा। आज आप एक ऐजेंसी खोल रहे हैं और आये दिन आप इस तरह की कारपोरेशन खोलते जायेंगे कल आप जूतों का कारपोरेशन खोलेंगे, कपड़े का खोलेंगे चीनी का खोलेंगे सीमेंट लोहे और खाद का खोलेंगे। आप इस तरह की कौन कौन सी कारपोरेशन बनाने जा रहे हैं। अगर आप इस तरह की कारपोरेशन बनाने जा रहे हैं तो देश को विश्वास दिलाइये, देश को भरोसा दिलाइये कि इन कारपोरेशनों में करप्शन नहीं होगा। अगर करप्शन बढ़े पैमाने पर होगा तो यकीनन देश वाले इस बात को कहने में हक बजाना चाहेंगे कि सुब्रह्मण्यम जो नेक नीयत था, अहिंसेवादी था और हार्ड वर्किंग था फिर क्या बात है कि इस के होने हुए कारपोरेशन में इस तरह का करप्शन हो रहा है? इसलिये मैं इन से अर्ज करना चाहता हूँ कि वह इस बात का ख्याल रखें कि इस कारपोरेशन में किसी तरह की करप्शन की बात न आने पावे।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस कारपोरेशन बिल में एजुकेशन के मुतल्लक रुपया मंजूर करवाने के बारे में कहा गया है। इस के बारे में मुझे खुशी होती है लेकिन इसमें मुझे सिर्फ एक बात कहनी है और वह यह है कि जैसा कि मैंने पहले कहा था कि उर्दू एक जमाने तक सारे देश में हिन्दी के बाद सबसे पॉपुलर ज़बान रही है। खासतौर पर नार्थ में और साउथ में इसके अखबार निकलते हैं और इस ज़बान में तरह तरह के मुशायरे होते हैं। मैं चाहता हूँ

कि एजुकेशन मिनिस्टर साहब तमाम स्कूलों में तो वह न कर पायेंगे लेकिन वह कोई ऐसा अलग पावर रखें जिस में कि बच्चे अपनी जवान में यानी उर्दू में अगर वे पढ़ना चाहें तो तालीम हासिल कर सकें। इसके साथ ही साथ जो हमारा तारीख का खजाना है इतिहास है, रेविन्यू के जो कागजान हैं वे सब उर्दू में हैं। और टोडरमल के जमाने से लेकर आज तक वह उर्दू में रखे हुए हैं। इनको जाया होने से बचाया जाये। गालिब, मोमिन, जोक, अनीस कैफी, आजाद सरशार, नसीम इन के कलाम और अच्छे अशहार जो हैं वे मिटने न पायें क्योंकि यह सब चीजें उर्दू में लिखी गई हैं। इसलिये मैं खास तबज्जो दिलाना चाहता हूँ अगर इन चीजों को मिटाने का इन का इरादा है तो इससे हिन्दुस्तान की शान पर धब्बा लगेगा।

अब मैं एटामिक शक्ति के बारे में कुछ अर्ज करना चाहता हूँ। इसके बारे में कहा गया है कि हम अच्छे तामीरी कामों के लिये इसका इस्तेमाल करेंगे और इसके लिये रुपया मंजूर करवाने के लिये कहा गया है जिससे मुझे बड़ी खुशी हुई है। यह सही बात है लेकिन मैं य अर्ज करना चाहता हूँ।

दो रंगी छोड़ दे एक रंग हो जा।

सरासर मोम हो या संग हो जा ॥

अगर करना है तो थोड़ा थोड़ा करके करते रहिये। यह ठीक है कि हम किसी पर हमला नहीं करेंगे। यह मैं मानता हूँ कि अगर हम पर कोई हमला करेगा तो हम हाथ जोड़ कर खड़े नहीं हो जायेंगे। न यह लाल बहादुर शास्त्री के बस में है और न डिफेंस मिनिस्टर श्री चह्दान के बस में है। मैं अब भी लड़ाई का खतरा मानता हूँ क्योंकि चीन जो हिन्दी चीनी भाई भाई कहता था वह कसाई निकला। मैं खुले तौर पर यह कहना चाहता हूँ कि सरकार को अपनी पालिसी पर फिर से सोचना चाहिए। हम किसी पर हमला करने के लिये एटम बम तैयार करना नहीं चाहते हैं लेकिन चीन जिस ने एटम बम तैयार कर लिया है

और हम पर कभी भी हमला कर सकता है तो इसलिए हमें भी अपना एटम बम तैयार रखना चाहिए। मैं गांधी वादी हो कर भी यह बात कहता हूँ। क्योंकि गांधी बाबा ने कहा था कि कायरता और बजदिली से तशद्दुद अच्छा है। यह बात मुझे उन्होंने उस वक्त कही जब लोग पागल हो गये थे। जब लोग दिवाना होकर एक दूसरे को मजहब के नाम पर कतल करते थे। तो उन्होंने उस वक्त कहा था कि कायरता से तशद्दुद अच्छा है। अगर चीन हमारे हिन्दुस्तान को हमारे हिन्दुस्तान के मारल को, हमारी सरकार के मारल को, हमारी फौज के मारल को एटमबम से डराना चाहता है तो मैं कहता हूँ कि चाँद बड़ी से बड़ी रकम क्यों न मंजूर करवानी पड़े हमें होसला करके एटमबम बनाना चाहिए इसलिए नहीं कि हम को इसको किसी पर चलाना है बल्कि अगर कोई हम पर चलायेगा तो हम रहम नहीं खायेंगे। और हमारा देश भी तबाह न हो।

बहरहाल मैं आप का शक्रिया अदा करता हूँ कि आप ने मुझे बोलने के लिये वक्त दिया लेकिन मैं एक बात की तरफ आप की तबज्जो दिलाना चाहता हूँ कि रिपब्लिकन पार्टी के आदमियों को लाठी चार्ज किया जा रहा है और उनको जेलों में डाला जा रहा है इसको आप बन्द कीजिए। (Time bell rings.) एक बात मैं और कहना चाहता हूँ इसमें मेहर चन्द खन्ना की मनिस्ट्री के बारे में कुछ रुपया मंजूर करने के लिये कहा गया है। अंग्रेजों के जमाने में भी मेहर चन्द खन्ना बड़ी शान से थे। खान मिनिस्ट्री और मुसलिम लीग में भी बड़ी शान से रहें और अब कांग्रेस में उन्होंने बड़ा काम किया है।

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्रि (श्री शाहनवाज खाँ) : काबिल तो हर वक्त काबिल रहता है।

श्री अब्दुल गनी : उन्होंने यह काम किया बरूशी गुलाम मोहम्मद और उनके भाई जो कि बड़े गरीब थे उनको बसाने के लिये

[ श्री अब्दुल गनी ]

यह डिफेंस कालोनी और दूसरी कालोनी में जहाँ सौ और दो सौ रुपये गज जमीन मिलती थी उन्होंने तीन रुपये गज जमीन मंजूर करवाई इस तरह से बेचारों ने बड़ा काम किया इसके साथ ही साथ उन्होंने काप्रेस वालों को प्लाट दिलवाये जिससे लाखों रुपये किराये का आता है। उन्होंने काप्रेस के लोगों को आवादा करने के लिये डेरी फार्म खोलने के लिये बड़ी बड़ी को-ऑपरेटिव फार्मस खोलने के लिये बड़ी बड़ी जमीने दी। लेकिन वहाँ पर यह चीजें तो नहीं हैं बल्कि वहाँ पर बड़ी बड़ी बिल्डिंगें बन गई हैं। दुकानें बन गई हैं जिन से लाखों रुपये का किराया लिया जा रहा है। ये बेचारे बड़े शरीफ और अच्छे मिनिस्टर हैं और हमारे शाहनवाज कहते हैं कि वह बड़े अच्छे और काबिल हैं, वैसे हमारे कपूर साहब भी उनके बारे में काफी कह चुके हैं। इसी तरह के हमारे काप्रेस के और बड़े बड़े नेता हैं। (Time bell rings.) और इसी काबलियत की वजह से लोग काप्रेस के बड़े बड़े नेता बन जाते हैं।

श्री शाहनवाज खां खुदा करे उनकी भी बारी आये।

श्री अब्दुल गनी : यह तो किस्मत की बात है। और जो ज्यादा खुशामद करता है वह प्रधान मंत्री और सब कुछ हो जाता है इस में अक्ल की क्या बात है। ]

श्री के० सी० बघेल (मध्य प्रदेश) : उपसभापति महादया, मैं इस बिल का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूँ। सब से पहले मैं इस बिल में अनाज के सम्बन्ध में जो १ अरब २ करोड़ रुपये की मांग की गई है, उसके सम्बन्ध में कहना चाहता हूँ। इसमें कोई शक नहीं है कि हम अनाज सकट निवारण के मामले में असफल रहे हैं और हम लोगों को उनकी जरूरत के मुताबिक अनाज नहीं दे सके। लोगों के सामने

अन्न के जहाज खड़े थे और लोग भूखों मर रहे थे, लेकिन हम अनाज उनके पेटों तक नहीं पहुँचा सके, यह एक बहुत ही दुख-भरी बात है। इस तरह से जहाजों को रोकना इस देश के लिए सबसे बड़ी दुर्भाग्य की बात है और लज्जा की बात है। इस तरह की बात दुबारा न हो, उसके लिए हमें काफी सावधानी बरतने की आवश्यकता है। यही मैं आप से प्रार्थना करना चाहता हूँ। हमारे सामने फूड कारपोरेशन की योजना रखी गई है। यह एक आशा का संदेश है। बुझे दिलों में अधकार जहाँ है, वहाँ प्रकाश, रोशनी और चिराग ले करके यह कारपोरेशन की बात लाई जा रही है। अब यह आगे देखा जायगा कि हम इसमें कहां तक सरसब्ज होते हैं और हम अपनी समस्याओं को सुलझाने में इस फूड कारपोरेशन के द्वारा कितनी सफलता प्राप्त करते हैं। मैं इस बात को अध्ययन करता हूँ, तो मुझ को यह मालूम होता है कि सुब्रह्मण्यम् साहब जो कि आज इसके चार्ज में हैं, बहुत दिक्कतों के बाद भी अपनी इस अन्न की समस्या का मुकाबिला करने में और इस को हल करने में काफी असें से काबलियत के साथ लगे हुए हैं और इसमें मुझ को दो राये नहीं मालूम पड़ती वे इसमें ढिलाई दे रहे हैं, ऐसा मैं कभी नहीं कहूंगा।

उनके सामने जो दिक्कतें आती हैं उन दिक्कतों को अगर हम देखते हैं तो ऐसा मालूम होता है कि अधिकारियों, व्यापारियों और सरकारी कर्मचारियों के द्वारा वे आती हैं, जिन को कि आगे चल कर उनको ज़रा कड़े हाथ से सम्हालना पड़ेगा। लेकिन इस के साथ साथ यह बात भी सही है कि देश में ऐसी एक फ़िजा पैदा हो गई है, राजनैतिक फ़िजा, जिसमें कि भिन्न भिन्न दलों के लोग भी सत्ता की राजनीति को जीवन में प्रधानता देने के कारण, ऐसे मौकों का कुछ फायदा उठाते हैं। मैं किसी

दल विशेष की बात नहीं कहता । इसमें सत्ताधारी दल के लोग भी कभी कभी शामिल हो जाते हैं । तो यह जो अन्न का मामला राष्ट्र का संकट है इसको एक राष्ट्रीय समस्या मानना चाहिए और दल गत राजनीति के लिए एक विषय बना कर के सत्ता हथियाने के लिए एक इसका इस्तेमाल नहीं होना चाहिये । यह सभी राजनीतिक दलों के लोगों के समझने की बात है क्योंकि अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमारा देश बरबाद होगा और फिर कोई दल और कोई राजनीति नहीं चल सकेगी हम आगे आने वाले समय में स्वस्थ परम्परा हर दल में कायम करें और उसका नतीजा यह हो कि चाहे जिस दल के हाथ में शासन हो लेकिन ऐसी राष्ट्रीय संकट की समस्याओं के समय में हम उस सत्ताधारी दल का हाथ मजबूत करें । आज कांग्रेस के हाथ में शासन है कल मुमकिन है कि किसी दूसरे दल के हाथ में आ जाय । लेकिन स्वस्थ परम्परा यह कायम हो कि जिन लोगों के हाथ में शासन हो ऐसे राष्ट्रीय संकट के समय में एक दिल हो कर के, एक जान हो कर के और संगठित हो कर के हम सब शासन का हाथ मजबूत करें ।

श्री गिरिराज किशोर कपूर : हमें खुशी है कि आपको यकीन हो रहा है कि सत्ता दूसरे के हाथ में जायगी ।

श्री के० सी० बघेल : देखिये यह तो आदमी महज बेवकूफ होगा जो यह समझेगा कि :

“यावत् चन्द्र दिवाकरो”

एक ही आदमी की सत्ता रहेगी । कभी न रही है और न रहेगी । अगर वैसा मैं सोचूं तो मुझसे अधिक बेवकूफ कोई न होगा । इसलिये मैं इस बात को मानता हूं और दूरदृष्टि से मानता हूं हलकेपन से नहीं ।

श्री गिरिराज किशोर कपूर : धन्यवाद ।

श्री के० सी० बघेल : तो यह जब फुडप्रेन के पर्वज का मामला आता है तो उसमें मुझे एक बात यहां कहने के लायक जो मालूम पड़ती है वह यह है कि जब इस मामले को मैं देखता हूं तो कृषकों के चेहरे मेरी नजर के सामने आ जाते हैं । कृषक का कृश शरीर जो है उसके पिचके हुए गाल और निचोड़े हुये चेहरे एक तरफ तो हम उसको देखने हैं और दूसरी तरफ हम यह कहते हैं कि ये अन्न-दाता हैं हमारे देश की रोड़ की हड्डी हैं और इन्हीं के भरोसे हमें सब अनाज मिलता है । हम केवल उसको अपनी स्वार्थ सिद्धि का साधन बनाये हुए हैं लेकिन हम उसकी ओर ध्यान नहीं देते हैं । यह सही है कि आज थोड़ा प्लानिंग और दूसरे मामलों में हमने थोड़ा उसकी तरफ ध्यान देना शुरू किया है । लेकिन फिर भी आलटोल सब बातों को देख करके मैं कहूंगा कि अभी भी किसान बहुत उपेक्षित है उसकी तरफ दुर्लक्ष्य किया जा रहा है वह दुखी है और उसकी मनोदशा दिनों दिन भयंकर होती जा रही है ।

मैं छत्तीसगढ़ क्षेत्र से आया हुआ हूं जिसको राइस बाउल आफ इंडिया कहते हैं वहां आमतौर से किसानों के मुंह से यह आवाज निकलने लगी है : “छेरी वियावय हुंडरा वर” यह एक छत्तीसगढ़ी कहावत है और इसका मतलब यह है : “A goat to beget for a wolf” इसका मतलब यह हुआ कि वे यह कह रहे हैं कि हम लोग तो मर मर कर के अनाज पैदा करे मशक्कत से सब चीजें पैदा करे और वे लोग जो शहरों में ऐश व आराम की जगह पर रह रहे हैं वे खायें सस्ते भाव से और हमारी जो जरूरत की चीजें हैं जैसे बैल है लोहा है और फर्टिलाइजर्स हैं ये सब आसमान छूने वाली कीमतों पर मिलें तो इस तरह से

(श्री के० सो० बघेल)

हम ज्यादा दिनों तक नहीं रह सकेंगे। आज किसान की क्या हालत है? वह सबसिस्टेंस लेबिल पर रहता है। इकोनामिक लाज के मुताबिक चीजों की जो कीमतें निर्धारित करने की प्रणाली है उसके मुताबिक अगर आप देखें तो मैं ईमानदारी से यह कहता हूँ कि आप अनाज की वास्तविक कीमत उसको नहीं दे रहे हैं। यह क्या बात है कि मेहनत मशक्कत करने वाला आदमी पूरा बदन पर कपड़ा न पहन सके अपने बाल बच्चों को स्कूल में न पढ़ा सके सड़ियाँ गर्मी से बचने के लिये मकान न बना सके और कर्जों से रात दिन लदा रहे। ऐसी स्थिति हमारे देश के लिये बड़ी खतरनाक है बड़ी भयंकर है और हम लोगों के लिये जो अपने आपको देश सेवक और देशभक्त कहते हैं शर्म की बात है कि हम इसको जल्दी से जल्दी ठीक नहीं कर पा रहे हैं। हम रेमुनरेटिव प्राइस देने की बात करते हैं लेकिन अभी भी जो अनाज की कीमत बांधी गई है मैं आपसे छत्तीसगढ़ की हालत जानते हुए कहता हूँ कि किसान को पूरी पूरी रेमुनरेटिव प्राइस नहीं मिलती है। समय बहुत कम है। इसलिये मैं डिटेल में नहीं जाऊँगा। अगर उसकी बोआई खेत के जोतने में अनाज में और खाने पीने में तमाम दुनिया भर का खर्चा वह करता है और औरत मर्द जिस तरह कमाते जाते हैं उस तरह उनकी मेहनत मजदूरी और मेहनताना अगर आप बांधें तो मैं कहता हूँ कि उसे उचित मूल्य नहीं मिल रहा है। (Time bell rings) मैं दो तीन मिनट से ज्यादा समय नहीं लूँगा और बहुत जल्दी खत्म कर दूँगा।

शुगर मिल्स के बारे में तो 2 करोड़ की विदेशी मुद्रा सब्सीडी के रूप में घाटा पूर्ति के रूप में आप उन विदेशी मुद्रा के कमाऊ पूर्तों को दे रहे हैं जो आपके लाडले हैं और उनका आप खयाल नहीं कर रहे हैं जो आपके इस पंचभौतिक स्वदेशी चोला को जिंदा रखते हैं। गन्ना पैदा करने वाले किसान की

तरफ आप दुर्लक्ष्य कर रहे हैं अंडा देने वाली मुर्गी भूख रख कर अंडे बेचने वाले की रक्षा कर रहे हैं।

एजुकेशन के मामले हैं यह जो आज एजुकेशन मिल रही है उसके बारे में बहुत से लोगों ने कहा है। मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि आज हमको जो शिक्षा मिल रही है वह केवल मेटल शिक्षा ही मिल रही है। वास्तव में वह फिजिकल मारल और स्प्रिचुअल होनी चाहिये। केवल बाहर की बड़ी बड़ी डिग्रियाँ प्राप्त करने से कुछ नहीं होगा। चरित्र बल का मजबूत मनोबल का निर्माण कनरा होगा शिक्षा से।

कोरबा के विषय में कुछ शब्द कहना चाहता हूँ। मैडम एक दो मिनट में और ले लेता हूँ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: The Chairman requested that each Member should take only ten minutes

श्री के० सो० बघेल : कोरबा और कोयना पब्लिक सेक्टर के हाथ में जायेगा और मैं यह कहना चाहता हूँ कि वहाँ जो जनरल मैनेजर रहें वे प्रॉविश्यालिज्म वाले व्यू के न रहे नेशनल आइडियाज के आदमी रहें और वहाँ के जो लोकल आदमी हैं उनको नियुक्ति में प्रमुखता दें योग्य जो हों उनको प्रायरीटी दें और जो अयोग्य हों उनके प्रशिक्षण का इन्तजाम करें और अच्छे आदमी वहाँ पर रखे जायें।

अटॉमिक एनर्जी के विषय में हमें विध्वंसक घातक और मारक बातों की तरफ न जा करके रचनात्मक बातों की तरफ जाना चाहिये और इस सम्बन्ध में ऐसे अनुसंधान होने चाहियें जिससे दुनिया में जगत गुरु भारत से आशा का प्रकाश मिल सके। कई भाइयों ने कहा कि हमारे पास अगर अटॉम बम नहीं रहेगा तो हमारे ऊपर हमला हो जायेगा। यह एक ऐसी जटिल समस्या



कि, जिसके ऊपर बहुत कुछ बोला जा सकता है, लेकिन उसके लिये समय नहीं है। इतना मैं अवश्य कहूंगा कि आज आठम बम बनाने की दौड़ में हम दूसरे देशों से मुकाबिला करें, ऐसी स्थिति में हमारा देश नहीं है और अगर आठम बम आप बना भी लेंगे तब भी सुरक्षित है, ऐसी बात नहीं है। धन्यवाद।

SHRI DAHYABHAI V. PATEL (Gujarat): Madam Deputy Chairman, I am grateful to you for having given me this opportunity to speak on the Appropriation Bill. I know that my Party has had its time; in my absence a representative of the Party had spoken already but because I have not taken the time of the House for quite some time, I am glad for the indulgence you have shown to me and I am grateful to you.

Looking at the Appropriation Bill and the figures of the amounts asked for, one's attention is naturally drawn to the large sums indicated for the Food and Agriculture Ministry, for purchase of foodgrains. I understand the House has debated the food problem several times. I doubt whether merely debating the food problem in this House is going to result in the production of more foodstuffs. Has not our Government taken the bigoted attitude of the ancient Brahmin that led to the downfall of Hinduism? Has not the Government taken up such an attitude? We have had examples of countries that have secured a high productive potential where there was hardly any production. We have on the one side Israel where they have converted a desert into blooming field. When we were in difficulty, when everybody heard of our difficulties, the Consul of Israel came to Delhi, saw the Food Minister and made his offer. He quoted the instance of Israel experts teaching people in Africa how to produce more from the same land. I do not know what we are doing about it. We have the example of one simple agriculturist from Israel,

M. Haleri, who came to Sevagram. What he did in Sevagram should be known to people, to at least those who are agriculturists, how, by simple methods without much cost, he was able to produce more. Israel offered to help us to convert Rajasthan, a desert, into blooming fields but like the Brahmin, our Government says, "You are a born *shudra*. You cannot learn the *Vedas*". So, Israel is a country which is *persona non grata* and so we will not learn how to produce more from them even though people will starve, there will be starvation and there will be less production in this country. What is the policy that we are following in this country? For that policy, you are asking this House to sanction crores of rupees. There is also the example of Taiwan on the other side where they grow rice crops following a policy that we are supposed to have followed, the policy of giving land to the tiller. After the introduction of that policy of land to the tiller, the farmer has grown prosperous, the country has become prosperous while we have become a debtor nation begging every year for money and for foodgrains. This is a very sad commentary on the achievements of the Congress Government.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA (Bihar): May I ask a question?

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: Yes, the new convert to the Congress must get it.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: Not the new convert. My hon. friend is just now telling about a country from which he has just returned. May I know whether he knows the amount of money that has flown into that country by way of grants from the United States of America?

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: Well, this country has received aid not only from the United States of America but from any country in the world. We have borrowed from

[Shri Dahyabhai V. Patel.]

everywhere and what is the result? It is not a question of getting grants but it is a question of utilising the resources and the grants most productively. That is where we have failed and that is where the achievement of the Congress Ministry has been a total zero and that is why we are in this sad difficulty. If we gave land to the tiller and had followed that policy that Taiwan has followed, we would not have been in these difficulties.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: I am happy that my friend advocates the policy of land for the tiller, a policy which his Party has been opposing so far.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: That is not the point. We are now in difficulties. If you have put that policy of giving land to the tiller, I believe you have, at least the side on which you sit now has but then it has not brought in any result. It has not been done efficiently. Whatever you do, whether you get money or anything, you must do it efficiently. I think my good friend is a Hindu. I think the lesson was taught to us in the Gita many many years ago, in very simple words "Yoga Karmeshu koshalam", whatever you are doing, do it efficiently. By that standard, the Congress Government has failed and that is why we have this difficulty of food. When I went and talked to the Food Minister after my last visit to Taiwan, he was inclined to do something. When I returned yesterday, I was looking at my post and I received a letter from the Collector of Customs saying that certain literature which has come to me from the Republic of Taiwan relating to the Indo-Taiwan Cultural Association have been confiscated and that if I did not go and represent to him in fifteen days, they will be destroyed. Is it not like the Brahmin who says, "No, you cannot learn from them." Or, is it not like the story that we have heard of the library in Alexandria? The victorious

armies went to the General who referred them to the Khalif and asked him what should be done.

SHRI AKBAR ALI KHAN (Andhra Pradesh): That is a wrong story, absolutely wrong.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: It may be wrong, I agree it is wrong.

SHRI AKBAR ALI KHAN: Then, why quote it?

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: It is only illustrative. I am only quoting it as an illustrative point. The story may be wrong but this is how the Congress Government is behaving. "What is good knowledge has been stated in the book, that is the new book, and it has not been referred to in the old book. Therefore, destroy it." And they destroyed the library. I am quite willing to be corrected that this story is not correct, has no historical basis but this is what the Congress Government is doing.

شری عبدالغنی - اکبر علی خان  
صاحب - یہ بات تو صحیح ہے نا -

†[श्री अब्दुल गनी : अकबर अली खां  
साहब, यह बात तो सही है न ? ]

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: You are not prepared to learn from people who have made agriculture a success. Why is the per acre production in India falling? Has anyone thought about it? You are just thinking of getting money from abroad or getting food from abroad. Is this ever going to solve your problem? You cannot utilise whatever money you have got efficiently, the crores of rupees you have put in the public sector projects.

SHRI A. D. MANI: May I ask the hon. Member whether the literature that he brought with him contained anything objectionable? He must have had an opportunity of going through the literature. Was it only

† [ ] English translation.

literature dealing with friendship between Taiwan and India?

**SHRI DAHYABHAI V. PATEL:** One of the books I brought was given to the Food Minister and he has not found anything irregular in that. One copy I have presented to the Parliament Library. Besides, there were other copies and other literature pertaining to the Indo-Taiwan Cultural Association. It is nothing political and yet the Collector of Customs banned it because of some order issued by some zealous officer who wanted to be friendly to Peking and therefore did not want literature from any other country to come to India.

**PROF. M. B. LAL (Uttar Pradesh):** I hope no book on agriculture.

**SHRI DAHYABHAI V. PATEL:** There is one on agriculture.

**PROF. M. B. LAL:** Was that also banned?

**SHRI DAHYABHAI V. PATEL:** That parcel contained it and this is the order I got. These books are lying with the Collector of Customs and if I do not . . .

**SHRI AKBAR ALI KHAN:** Have you gone through it?

**SHRI DAHYABHAI V. PATEL:** Has the Minister gone through it? Have you gone through it, Mr. Akbar Ali?

**SHRI AKBAR ALI KHAN:** I am asking you because you are defending it.

**SHRI DAHYABHAI V. PATEL:** I am pointing out how literature coming from Taiwan is banned. Tell your Ministers to behave. Ask them in your Party meetings. We are at war with Peking but is there any ban on literature from Peking? I want to know this. Communist literature in tons and tons comes to India but is there any ban imposed on that? You impose a ban here in this, when we

have to learn and when we are in this situation. I want to know as to why Government did not accept the offer of Israel. We were not at any 1 P.M. war with Israel when they offered to send their experts. Now, I know there are teams from Taiwan working in Africa; there are teams from Israel working in the African countries.

**THE MINISTER OF PLANNING (SHRI B. R. BHAGAT):** May I know how Taiwan and Israel are relevant in this discussion?

**SHRI DAHYABHAI V. PATEL:** This is agriculture. Why don't you look beyond your nose? You are the Minister concerned about the doings of Bank of China and you are the guilty person; your party is guilty of making this country Communist. You are taking us to communism. You want the Bank of China to come here and to give a lot of money to the elections in favour of the Communists. Your head is not worried when this happens and you think everything is all right. In the answers you give you were shielding them. You do not want to bring them out.

**SHRI B. R. BHAGAT:** On a point of order, is Bank of China relevant in this discussion?

**SHRI DAHYABHAI V. PATEL:** Your interruption, your outlook is more irrelevant and therefore you aggravated me. I was only telling how literature on agriculture, how knowledge offered from other countries to improve our agriculture is being disregarded and being distorted by questions like the ones which the Minister put just now so that people should not know the correct facts. As long as we have Ministers like that this country is never going to progress. You are working with a wrong mind, from a wrong angle. You are not honest to yourself, to your conscience, to your people and to your country.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA  
I just want a small clarification from the hon Member. I am very glad he has been converted to this point of view that the land should belong to the tiller of the soil.

SHRI DAHYABHAI V PATEL I never said that, Madam. The Congress Party and the new converts to the Congress Party are experts in twisting things in a certain way. You have also learnt it.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA:  
I would like to seek this clarification. The hon Member has all the time been telling us that things have improved in Taiwan because the land belongs to the tiller of the soil. Am I correct? Secondly, he says that the only way to improve agriculture is to give the land to the tiller while his party has all the time been opposing land ceilings. They have not been co-operating with our plan to see that the land belongs to the tiller of the soil. Now, will he kindly convert his own party as he has converted himself?

SHRI DAHYABHAI V PATEL  
Madam, the interruptions are irrelevant, coming from a confused mind, which has been confused from one side to another.

THE DEPUTY CHAIRMAN He is only asking about what you saw in the place you went.

SHRI DAHYABHAI V PATEL But why does he put something in my mouth which I never said? Today the Congress has made the country accept this position that the land is to the tiller. Whether I accept it or not, the country has been made to accept it because it is the policy of the ruling party. But having accepted that, what have you done? If Taiwan has been able to make a success of it, why have you not? Why have you failed? That is what I am trying to tell you. You can do it both ways. I am not saying that that is the only way to make agriculture a success. If you

want to follow the policy of land to the tiller, you carry it to its logical conclusion but you have failed in that because you are half-hearted. You want to please some of your rich friends, who own big farms like the mill-owners in Ahmedabad. They have big farms which are far above the ceiling. Therefore, Madam, this confused person with a confused mind is trying to confuse the issue. The policy of land to the tiller has been accepted by them. It is the policy of the Government, it should be carried out efficiently and the Government should see that the result that ought to come out of that policy does come out. Unfortunately it does not. Why it does not is explained very well and it will become self-explanatory if the book that I gave to the hon. Food Minister on this subject were studied. I have presented a copy to the Library also and people who want can see it. I thought that more books and more literature of this type were necessary. Therefore I was trying to bring in more of them, whether it is in this parcel that has been confiscated or whether it is in other parcels that are coming later, I do not know. If this is the attitude of the Government, what can happen? That is what I am trying to show.

THE DEPUTY CHAIRMAN Your time is up.

SHRI DAHYABHAI V PATEL I would request you to be a little indulgent because some of my time has been taken by these interruptions which were absolutely irrelevant. I was trying to point out that these two small countries have made a success of their policies. One is the policy of the land to the tiller. In Israel they have made all the different experiments. They have a collective farm; they have the *kibuts*, they have the small peasant proprietors working in the villages. And they have made a success of agriculture by bringing water through a pipe line of 150 miles. If they can make a success of that in

that area, where there is so much shortage of water, why can we not when we have rainfall, when we have large rivers? I say there is something wrong in our planning; there is something drastically wrong with our agriculture; there is something radically wrong with the Government that is at the root of all this. Madam, I am trying to point out that all this needs to be corrected. Until it is corrected we shall have to go on voting large sums of money in this way. It is going to cause more and more inflation because money not properly utilised becomes a burden. It becomes a millstone round our neck. There will be more debt charges, more waste and the prices will go up higher and higher. If inflation is to be arrested the way is not the one which the Congress is following. If we have to learn that lesson let us learn it even from these two small countries though I dare say there are many others that have succeeded in agriculture.

**THE DEPUTY CHAIRMAN:** Mr. Bhagat will reply at 2.30 P.M.

The House stands adjourned till 2.30 P.M.

The House then adjourned for lunch at eight minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at half-past two of the clock, **THE DEPUTY CHAIRMAN** in the Chair.

#### STATEMENT RE REPORT (NOVEMBER, 1964) OF THE INDIAN AIR FORCE AIRCRAFT ACCIDENTS COMMITTEE

**THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF DEFENCE (DR. D. S. RAJU):** Madam Deputy Chairman, on behalf of Shri Y. B. Chavan, I wish to make the following statement.

In reply to part (c) of Starred Question No. 243 which was answered by him in the House on 5th May, 1964, he had *inter alia* stated that a Committee had been set up under the Chairmanship of the Cabinet Secretary, with the following terms of reference:—

- (i) to examine the existing regulations and arrangements:—
  - (a) for flying and flying safety;
  - (b) for clearing an aircraft as fit for flying;
  - (c) regarding the standards of training of a pilot in relation to the tasks he is entrusted with;
- (ii) to examine the adequacy of the above regulations and arrangements and their implementation, and
- (iii) to recommend remedial measures, if any, to minimise accidents.

A Report prepared by the Committee excluding operational data is laid on the Table of the House.

The findings and recommendations of the Committee are under consideration of Government.

#### THE APPROPRIATION (NO. 6) BILL, 1964—continued

**SHRI B. R. BHAGAT:** Madam Deputy Chairman, the House debated this Appropriation Bill and I am glad that the hon. Members who participated in this dwelt on various matters, except, of course the hon. Member who spoke last. I am sorry, Madam, to say that whatever relevance he had in his points, he lost them in the excitement that he created. I can understand his excitement. Probably the books that were held up by the customs and the letter he got probably irritated him or excited him . . .